श्रम विभाग

श्रादेश

दिनांक 2 नवस्वर, 1987

स॰ श्रो॰वि॰/गुड़गांव/228-87/43130 - च्रिकि परियरणा है राज्यपाल की राय है कि मैं॰ केंग फार्म प्रा॰ लि॰, गुड़गांव के श्रमिक विहारी लाल मार्फन श्री भीम सिंह यादव, 1 सी/16-ए.एन. ग्राई.टी., फरीवाबाद तम अबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित जामले के सम्बन्ध में कोई प्रौद्यांगिक विवाद है;

भीर चंकि हरियाणा के राज्यपात इन जिना का न्यायतिर्णत हैन् निविष्ट करना बांखनीय समझते है;

इसलिये, श्रव, श्रौद्योगिक विवाद श्रिधिनियम, 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के लाउड (व) द्वारा प्रदान की गई शिक्तयों का प्रयोग करते हुये हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा उक्त ग्रिधिनियम की द्वारा 7-क के ग्रिधीन गिंठत श्रोद्योगिक श्रिधिकरण, हरियाणा, करीदावाद, को नीचे विनिर्दिष्ट मामले जो कि उक्त प्रवन्धकों तथा श्रिमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला/मामले हैं अथवा विवाद से सुसंगत या संबंधित मामला/मामले हैं, न्यायनिर्णय एवं बंचाट 3 मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं :--

क्या श्री बिहारी लाल की सेवाधों का समापन न्यायोजित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो यह किस <mark>राहत का हकदार है ?</mark>

सं श्रो वि | गृड्गांव | 169-87 | 43137 - चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राम है कि मैं को फार्म श्रा कि लि , गृड्गांव, के श्रीमिक श्री मुखितयार मिया, मार्फत श्री भीम सिंह यादव, 1-सी | 46-ए एन श्राईटी., फरीदावाद तया प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद विखित मामले के सम्बन्ध में जोई श्रीद्योगिक विवाद है;

भीर चुंकि हरियाणा के राज्यपाल इस विवाद को न्यायनिर्णय हेत् निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं;

इसलिए, श्रव, श्रौद्योगिक विवाद सिर्धानियम, 1947, की धारा 10 की उप धारा (1) के खण्ड (घ) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा उनत श्रीधनियम की धारा 7-क के श्रिधीन गठित धोद्योगिक मिधकरण, हरियाणा, फरीदाबाद, की नीचे विनिर्दिण्ट मामला जी कि उनत प्रजन्धकों तथा क्षमिक के बीच या तो विवादयस्त मामला/मामले हैं अथवा विवाद से मुसंगत या सम्बन्धित मामला/मामने हैं न्यायनिर्णय एवं पंचाट 3 मास में देने हेतु. निर्दिष्ट करते हैं :--

नया श्री मुख्तियार मिया की सेवाश्रों का समापन न्यायां जिल तथा ठीक है? यदि नहीं, तो वह किस सहत का हकदार है?

संख्या ग्रो०वि०/मुइगांव/229-87/43144. - चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं० केंग फार्म प्रा० लि०, गुड़गांव के श्रीमिक श्री ग्रच्छे लाल, मार्फत श्री भीम सिंह यादव, 1-सी/16यए, एन. ग्राई. टी., फरीदाबाद तथा प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामने के सम्बन्ध में कोई श्रीयोगिक विवाद हैं;

भीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल इस विवाद को न्यार्थानर्णय हेतु निर्दिष्ट करना बांछ नीय समझते है ;

इसलिये, श्रव, श्रीद्योगिक विवाद श्रधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (घ) द्वारा प्रदान की गई शिवतयों का प्रयोग करते हुवे हरियाणा के राज्यशाल इसके द्वारा उवन श्रधिनियम की धारा 7-क के श्रधीन गठित श्रीद्योगिक श्रधिकरण, हरियाणा, फरीदाबाद, को नीचे विनिर्दिष्ट मामला जोकि उचत प्रवन्धकों तथा श्रीमक के बीच या तो विवादश्रस्त मामला है अथवा विवाद से सुसगत या सम्बन्धित मामला/मामले हैं न्यायनिर्णय एवं पंचाट 3 मास में देने हेत् निर्दिष्ट करते हैं: —

क्या श्री ग्रच्छे लाल की सेवाग्रो का समापन न्यायीचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है?

सं o. मो o वि o/गृड्गांव/ 156-87/43151.--चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राये है कि मैं उक्षेग कार्म प्रा० लि॰ न गृड्णांव, के श्रमिक श्री सुरेश प्रसाद शर्मा, मार्फत श्री भोग सिंह यादव, 1-सी/ 46-ए. एन. ग्राई. टी., फरीदावाद तथा प्रवर्श्यकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले के सम्बन्ध में कोई ग्रीशोगिक विवाद है ; ग्रीर चंकि हरियाणा के राज्यपाल इस विवाद को न्यायनिर्णय हेत् निर्दिंग्ट करना बांछनीय समझते हैं; इसलिये, ग्रव, ग्रीद्योगिक विवाद शिवितयम, 1947, की धारा 10 की उपझारा (1) के खण्ड (घ) द्वारा प्रदान की गईं शांवतयों का प्रयोग वरते हुये हरियाणा वे राज्यपाल इस वे द्वारा उवत श्रवित्यम की घारा 7-क के श्रवीन गठित श्रीद्योगिक श्रविकरण, हरियाणा, फरीदाबाद, को नीचे विनिर्दिष्ट मामला जे कि उवत श्रवत्यकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादशस्त मामला है श्रयवा विवाद से सुसंगत या सम्बन्धित मामला है न्यायनिर्णय एवं पंचाट तीन मास में देने हेत्. निर्दिष्ट करते हैं :---

क्या श्री सुरेश प्रसाद की सेवाग्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

दिनांक 3 नवस्वर, 1987

सं ग्रों वि ्ोहं 94-86 43233.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि हरियाणा शहकारी शुगर मिल्ज, राहतक के श्रीमक श्री रमेंण, पुत्र श्री दरियान सिंह, मार्फत श्री सुन्दर सिंह, महासचिन, जिला सीटू कमेंटी, रोहतक तथा उसके प्रवन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले के सम्बन्ध में कोई भौद्योगिक विवाद है;

श्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल इस विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते है;

इसलियें, ग्रंथ, श्रोद्योगिक विवाद श्रधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिव्ययों का प्रयोग करते हुने हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी श्रधिसूचना सं० 9641-1-श्रम-78/32573, दिनांक 6 नवम्बर, 1970 के साथ गठित सरकारी श्रधिसूचना की धारा 7 के श्रधीन गठित श्रम न्यायालय, रोहतक को विवादप्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय एवं पंचाट तीन मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या उक्त विवाद से सुसंगत ग्रथवा सम्बन्धित मामला है:—

क्या श्री रमें श की सेवा श्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

संश्रो विश्रोह/90-86/43240. चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि हरियाणा सहकारी शुगर मिल्ज, रोहतक, के श्रमिक श्री ग्रानन्द सिंह, पुत्र श्री सुरत सिंह, मार्फत श्री सुन्दर सिंह, महासचिव, जिला सीटू कमेटी, रोहतक तथा उसके प्रबन्धकों के बीच इसमें इसके बाद लिखित मामले के सम्बन्ध में कोई ग्रौद्योगिक विवाद है;

भीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल इस विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना बांछनीय समझते हैं;

इसिनिये, ग्रव, ग्रौद्योगिक विवाद ग्रिधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिवतयों का प्रयोग करते हुये हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी ग्रिधिसूचना सं 9641-1-श्रम-78/32573, दिनांक 6 नवम्बर, 1970 के साथ गठित सरकारी ग्रिधिसूचना की घारा 7 के ग्रिधीन गठित श्रम न्यायालय, रोहतक को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे संबंधित नीचे लिखा मामला न्यायिनिर्णय एवं पंचाद तीन मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रवन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या उक्त विवाद से सुसंगत ग्रथवा सम्बन्धित मामला है:—

क्या श्री ग्रानन्द सिंह की सेवग्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है? यदि नहीं, तो वह किस राहत का दृकदार है?

सं बो विव /रोह/89-86/343247.—-चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की रावें है कि हरियाणा सहकारी मुगर मिल्ज, रोहनक, के श्रमिक श्री मुख्तथार सिंह, पुत्र श्री चन्द्र भान, मार्फत श्री सुन्दर सिंह, महासचिव जिला सीटू कमेटी, रोहतक तथा प्रवन्यकों के बीच इसमें इसके बाद लिखित मामले के सम्बन्ध में कोई श्रीद्योगिक विवाद है;

भौर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल इस विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्विष्ट करना वांछनीय समझते है ;

इसलिए, ग्रंब, ग्रौदयोगिक विवाद ग्रिधिनियम, 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के खंड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिक्तयों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी ग्रिधिसूचना सं० 9641-1-श्रम 78/32573, दिनांक 6 नवम्बर, 1970, के साथ गठित सरकारी ग्रिधिनियम की धारा 7 के ग्रिधीन गठित श्रम न्यायालय, रोहतक, को विवादगस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित मीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय एवं पंचाट तीन मास में देने हेतु निदिष्ट करते हैं जोकि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रीमक के बीच था तो विवादगस्त मामला है या उक्त विवाद से सुसंगत भाषता सम्बन्धित मामला है :---

क्या थी मुस्तयार सिंह की सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?